

09. सवैये

प्र.1 ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम किन-किन रूपों में अभिव्यक्त हुआ है?

उत्तर ब्रजभूमि के प्रति कवि का प्रेम कई रूपों में अभिव्यक्त हुआ है; जैसे-कवि चाहता है कि वह ब्रजभूमि में जन्म लेकर ग्वाल-बालों के बीच रहे। यदि वह पशु हो, तो नंद की गायों के बीच चरे, पत्थर हो, तो गोवर्धन पर्वत का हिस्सा बने और पक्षी हो, तो उसका निवास यमुना के किनारे कदंब के वृक्ष पर हो।

प्र.2 कवि का ब्रज के वन, बाग और तालाब को निहारने के पीछे क्या कारण है?

उत्तर कवि का ब्रज के प्रत्येक भाग के प्रति विशेष स्नेह इसलिए है, क्योंकि ये सभी कृष्ण से संबद्ध हैं। ब्रज के वन, बाग, तालाब श्रीकृष्ण की लीला और उनके प्रेम के साक्षी हैं, इसलिए कवि की आँखें ब्रज के वन, बाग और तालाब देखने को लालायित हैं।

प्र.3 एक लकुटी और कामरिया पर कवि सब कुछ न्योछावर करने को क्यों तैयार है?

उत्तर कवि के प्रेम का आलंबन हैं- भगवान श्रीकृष्ण। भगवान श्रीकृष्ण से संबंधित प्रत्येक वस्तु से कवि स्वयं को जोड़ना चाहता है। अतः जब बात श्रीकृष्ण की लाठी और कंबल की आती है, जो श्रीकृष्ण के श्रम-सौंदर्य के भी प्रतीक हैं और जो सदैव आराध्य श्रीकृष्ण के स्पर्श में भी रहे हैं, तो कवि उन पर सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार है।

प्र.4 सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

उत्तर एक सखी, गोपी से कहती है कि जिस प्रकार कृष्ण मोर मुकुट और गुंजों की माला गले में पहनते हैं, वैसे ही तुम भी पहनो। पीतांबर ओढ़कर लाठी ले लो और गायों एवं ग्वाल-बालों के साथ वन-वन घूमो। इस पर गोपी कहती है कि कृष्ण उसे इतने प्रिय हैं कि वह उनके सभी रूप धारण करेगी, लेकिन मुरली को अपने अधरों पर नहीं रखेगी, क्योंकि यह मुरली उसे कृष्ण से दूर कर देती है, कृष्ण इसके कारण हम पर ध्यान नहीं देते।

09. सवैये

प्र.5 आपके विचार से कवि पशु, पक्षी और पहाड़ के रूप में भी कृष्ण का सान्निध्य क्यों प्राप्त करना चाहता है?

उत्तर श्रीकृष्ण का जीवन पशु, पक्षी और पहाड़ के साथ पूर्णतः संबद्ध रहा है। पशु-गाय, पक्षी-मोर तथा पहाड़-गोवर्धन, ये तीनों श्रीकृष्ण की लीला के साक्षी हैं तथा भगवान से इनका सीधा संपर्क रहा है, इसलिए कवि पशु, पक्षी तथा पहाड़ के रूप में श्रीकृष्ण का सान्निध्य प्राप्त करना चाहता है।

प्र.6 चौथे सवैये के अनुसार गोपियाँ अपने आप को क्यों विवश पाती हैं?

उत्तर चौथे सवैये में गोपियाँ अनेक जतन (यत्न) के पश्चात् भी श्रीकृष्ण के मुख की मोहिनी मुसकान के सम्मुख स्वयं अपने आप को नियंत्रित कर पाने में विवश पाती हैं। इसके अतिरिक्त श्रीकृष्ण की बाँसुरी की मधुर तान भी उन्हें विवश करती है।

प्र.7 भाव स्पष्ट कीजिए

(क) कोटिक ए कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारों।

(ख) माइ री वा मुख की मुसकानि सम्हारी न जैहै, न जैहै, न जैहै।

उत्तर (क) रसखान का प्रेम सर्वस्व न्योछावर कर अपने प्रभु से मिलन की इच्छा रखने वाला प्रेम है। वे ब्रजभूमि की कँटीली झाड़ियों के ऊपर करोड़ों सोने-चाँदी के महल न्योछावर करने को तैयार हैं। रसखान की यह सर्वस्व समर्पण की भावना श्रीकृष्ण के प्रति उनके अनन्य प्रेम का परिचायक है।

(ख) गोपी श्रीकृष्ण की मधुर मुरली की तान और उनके रूप-सौंदर्य पर इस हद तक मोहित है कि वह सब कुछ नियंत्रित कर सकती है, परंतु श्रीकृष्ण के साँवले मुख की मोहिनी मुसकान के आगे वह विवश है। वह इस मुसकान के आगे स्वयं को सँभाल नहीं पाती।

प्र.8 'कालिंदी कूल कदंब की डारन' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर इस पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

09. सवैये

प्र.9 काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए

"या मुरली मुरलीधर की अधरान घरी अधरा न धरौंगी।"

उत्तर 'मुरली मुरलीधर' में 'म' वर्ण की आवृत्ति तथा 'अधरान घरी अधरा न धरौंगी' में 'ध' वर्ण की आवृत्ति के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार का सौंदर्य है। वहीं 'अधरान' अर्थात् होंठों या अधरों पर 'अधरा न' अर्थात् होंठों या अधरों पर नहीं, के कारण यहाँ सभंग यमक अलंकार है। भाषा में ब्रजभाषा की छटा देखते ही बनती है। 'अधरान घरी अधरा न धरौंगी' में ध्वनि-साम्य लक्षित होता है।

रचना और अभिव्यक्ति

प्र.10 प्रस्तुत सवैयों में जिस प्रकार ब्रजभूमि के प्रति प्रेम अभिव्यक्त हुआ है, उसी तरह आप अपनी मातृभूमि के प्रति अपने मनोभावों को अभिव्यक्त कीजिए।

उत्तर छात्र स्वयं करें।

प्र.11 रसखान के इन सवैयों का शिक्षक की सहायता से कक्षा में आदर्श वाचन कीजिए। साथ ही किन्हीं दो सवैयों को कठस्थ कीजिए।

उत्तर छात्र स्वयं करें।

Sources: Govindo Sir – Hindi Teacher, BMSSS

Hindi Guide Book